REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

इलेक्ट्रानिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम आज और कल

प्रा.जमादार रूकसाना एल.
यु.ई.एस.महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

प्रस्तावना

कल्पना कीजिए आज सवेरे उठने के बाद पहली चाय के साथ हमने न समाचार पढ़ा न टि वी पर समाचार सुना और न ही रेडिओ पर समाचार या कोई अन्य कार्यक्रम सुना।और तो और आज सबेरे से न ही हमने किसी से मोबाईल पर बात की,न ही किसी को एसएमएस किया और न ही आज कोई पत्रिका या कोई पुस्तक पढ़ी हो। ऐसे सोचना या कल्पना करना भी हमारे लिए कितना मुश्किल हो रहा है,वहाँ अगर प्रत्यक्ष रूप से ऐसा होगा तो क्या होगा ? क्योंकि आज हम जिस युग में जी रहे हैं,वह
विज्ञान,तंत्रज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के साथ-साथ अब मीडिया का युग हो गया है।सुबह उठते ही हम समाचार पत्र,टी.वी,रेडियो,मोबाईल का समावेश अपने जीवन में करते है और मीडिया यह किसी भी विषय की जानकारी को जोड़ने का उजागर करने का सशक्त माध्यम है। जनसंचार माध्यम को हम दो भागों में विभाजित करते हैं।

१.इलेक्ट्रॉनिक माध्यम।
२.मुद्रण माध्यम।

यह दोनों भाग अपने-आप में परिपूर्ण है।उनकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं,अपना-अपना महत्त्व है। तो सबसे पहले हम मीडिया या माध्यम क्या है ? इस पर विचार करेंगे।

जनसंचार विशेषज्ञ संचार को अर्थ का संप्रेषण कहते हैं-"संचार उस पारस्पारिक क्रिया का रूप है जो प्रतीकों के माध्यम से घटित होता है। ये प्रतीक,प्लास्टिक या किसी अन्य रूप में हो सकते हैं और किसी व्यवहार विशेष के लिए उद्दीपन का कार्य करते हैं। ऐसा व्यवहार जो व्यक्तिगत विशेष दशाओं के अभाव में स्वयं प्रतीक व्दारा उद्घटित नहीं हो पाता।"[१]

संचार मनुष्य के जीवन की प्रथम आवश्यकता है। संचार की कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी की मानव जाति। समय बदला,समाज बदला,धीरे धीरे मानव सभ्यता का विकास होने लगा और माध्यमों में परिवर्तन आने लगा।

लेखन,प्रकाशन संपादन और प्रसारण कार्य को मुद्रण और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से आहे बढ़ाने की कला को मीडिया (माध्यम) कहते हैं। आधुनिक बदलतें परिप्रेक्ष्य में सबसे शक्तिशाली माध्यम जो हमें प्रभावित कर रहा है वह मीडिया ही है। बदलते वैज्ञानिक स्वरूप ने आज पूरे विश्व को इतना छोटा बना दिया है कि एक बटन दबाते ही सम्पूर्ण विश्व हमारे सामने आ जाता है। तकनीकी परिदृश्य इतना बदल गया है कि कम्पुटर के माध्यम से पूरा विश्व हमारे सामने कम्पुटर के स्क्रीन पर दिखाई देता है। दृश्य,आँकडे तथा तस्वीरें इतनी आसानी से प्राप्त हो जाती हैं कि तिसकी कभी हमने कल्पना तक नहीं की थी।

मीडिया के कारण सम्पूर्ण विश्व हमे छोटा महसूस होने लगा है।बदलते परिप्रेक्ष्य में मीडिया व्यक्ति को उसके आधुनिक,सामाजिक परिवेश से जोडने की विश्व सहभागिता की ओर अग्रसर करता है।मीडिया की भूमिका विश्वस्तरीय परिप्रेक्ष्य में इतनी अहम हो गई है कि आज इसका प्रभाव दुनिया के हर एक कोने में दिखाई देती हैं।जिस तरह "ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दुसरों तक पहुँचना मुद्रित माध्यम था।उसी तरह शब्दों चलचित्रों व्दारा लोगों का मनोरंजन कराना इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है।"[२] आज मीडिया का प्रभाव छोटे बच्चों से लेकर वयस्क व्यक्तियों तक सभी को अपने जाल में जकड़े हुए है। आधुनिक समय में मीडिया यह एक महत्त्वपूर्ण संप्रषण माध्यम तथा अनुसंधान है।

माध्यमों के दोनों भागों में से पहला हिस्सा आता है - मुद्रित माध्यम का। इसका प्रयोग स्वतंत्रता के पहले से होता आया है और आजादी के कामों में भी हस्तलिखित पत्रिकाओं का प्रयोग होता था और बाद में आधुनिक मुद्रण यंत्र आ गए। उसके बाद मुद्रित माध्यमों के

प्रयोग में बहुत बड़ी क्रान्ति हुई।रूपचंद गौतम के अनुसार "छपे हुए मटीरियल का आम जनता तक सूचना पहुँचाने का कार्य ही मुद्रित माध्यम है।"[३] समाचार-पत्र,पत्र-पत्रिकाओं के रूप में प्रकाशित होनेवाले दैनिक साप्ताहिकों का मुद्रित माध्यमों में समावेश होता है।

खबरों को आम जनता तक पहूँचाने के लिए दो मार्ग सबसे ज्यादा लोकप्रिय रहे हैं।शिक्षित लोगों के लिए समाचार पत्र तथा अर्धशिक्षित लोगों के लिऐ रेडियो।पुस्तकें पत्र-पत्रिकाएँ और ग्रंथ पढ़ने के लिए स्थानीय संस्थानों व्दारा ग्रंथालय स्थापित होते हैं। वहाँ अत्यल्प शुक्ल में पाठकों को पढ़ने के लिए साहित्य उपलब्ध हो जाता है।आजकल इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का चाहे जितना प्रसार हो लेकिन सुबह सवेरे हमें चाय के साथ आज भी समाचार-पत्र न पढ़ने को मिले तो चाय का स्वाद जैसे फीका लगता है।अनेक किताबें,पत्र-पत्रिकाओं का आज भी लोग बड़ी बेसब्री से इंतजार करते हैं और बडे चाव से पढ़ते भी हैं।छात्राओं के लिए सहायक के रूप में मुद्रित माध्यमों की मदद लेनी पडती है। यह एक मार्गदर्शक के रूप में उन्हें सहायता करते हैं।

संचार माध्यमों के इस युग में इलेक्ट्रानिक माध्यमों का महत्त्व बढ़ रहा है । पूरे विश्व भर में ब्रॉडबैंड ग्राहक सिर्फ पचार करोड़ है। इंटरनैशनल टेलिकम्युनिकेशन युनियन इसका प्रयास कर रही है कि ब्रॉडबेंड आम लोगों तक पहुँचे और पूरे विश्वभर में जो गरीब देश और गरीब वर्ग है उनके पास यह नया सूचना का तंत्र पहुँचे। पूरे विश्व में इंटरनेट का प्रयोग करने वाले केवल पचीस प्रतिशत व्यक्ति हैं। अभी भी पचहत्तर प्रतिशत लोग इंटरनेट का प्रयोग नहीं कर पाते क्योंकि वह कम्प्युटर साक्षर नहीं है।अर्थात् आज भी लगभग पचहत्तर प्रतिशत लोग मुद्रित माध्यमों का उपयोग करते है। इसीलिए अनेक पत्र-पत्रिकाओं का पठन-पाठन करने वालों की संख्या आज भी अधिक हैं।

मुद्रित माध्यमों के साथ-साथ गत २०-२५ वर्षों में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आज मनुष्य के विकास का एक पर्याय बन चुका है। इस संदर्भ में नैमिशराय का कथन है-"विशेष रूप से इलेक्ट्रानिक मीडिया से तात्पर्य ऐसी विद्या से है,जिसके माध्यम से नई तकनीकी के व्दारा व्यक्ति देश-विदेश की खबरों के अलावा अन्य जानकारी भी प्राप्त करता हैं।"[४]

मानवीय संवेदनाओं के आदान-प्रदान के लिए बहुत पहले से माध्यमों की आवश्यकता रही है और आज इसका स्थान इलेक्ट्रानिक माध्यमों ने ले लिया है। जिससे बात करनेवाले व्यक्ति को हम प्रत्यक्ष रूप से देख और सुन सकते है। सात समन्दर पार बैठे व्यक्ति को हम अपने पास महसूस करते हैं।

आधुनिक युग में इलेक्ट्रानिक माध्यमों का प्रभाव बढ़ रहा हैं। सामाजिक जीवन में अनेक परीक्षाएँ भी इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाईन हो रही है। आईटी के क्षेत्र में तो सारे काम कम्प्युटर / इंटरनेट के माध्यम से हो रहे हैं। इसके लिए आप को ऑफिस जाने की भी जरूरत नही हैं। यह कार्य आप कम्प्युटर या लॅपटॉप पर कही भी कर सकते है। किसी शब्द के अर्थ की जानकारी चाहिए तो आप झट से इंटरनेट व्दारा उसकी सारी जानकारी विस्तृत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। वहाँ आप को घंटों ग्रंथालयों में बैठकर अनेक पुस्तकें देखने की जरूरत नहीं पडती है। कोई पुस्तक आप पढ़ना चाहते है और वह ई बुक है तो उसे आप अपने घर ही पढ़ सकते हैं। उसके लिए ग्रंथालय जाने की आवश्यकता नहीं है।

रेल,हवाई सेवा का टिकट आप अपने घर बैठे उपलब्ध करा सकते हैं।साथ ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से आप अपने टिकटों की स्थिति भी जान सकते हैं। बैंक के व्यवहारो में इलेक्ट्रानिक माध्यमों से ग्राहकों को सेवा देना आसान हो गया हैं।ई-बैंकिंग सेवा,एटीएम सेवाओं का प्रयोग अनेक लोग बड़ी सहजता से कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में सारे व्यवहार शेअरों की खरीदी और बिक्री भी ऑनलाईन होती है। पूरी जानकारी का भण्डार हमें घर बैठे हो जाता है। हम ऑनलाईन शॉपिंग कर सकते हैं,जिसे डोअर शॉपी कहा जाता है। फेसबुक,ट्यूटर के माध्यम से हम अपने विचार सोशल नेटवर्किंग व्दारा लोगों के सामने रख सकते हैं। कोई भी स्थान,गाँव,देश,खंड,कहीं भी हो इंटरनेट पर गुगल सर्च के माध्यम से उस जगह का सही स्थान,उसके आस-पास के स्थानों की सही जानकारी तथा संपूर्ण नक्शा हमें घर बैठे मिल जाता है। इस कार्य में सैटेलाइट की मदद ली जाती है। भारत एक विकासशील देश है परंतु यहाँ के सभी व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से परिचित नहीं है। इसीलिए उन्हें जब इन माध्यमों का ज्ञान होगा तब ही वे इसका सुगमता से प्रयोग कर सकते है।धार्मिक कार्य में भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग होता है।इस में ऑनलाइन दर्शन-पूजा की जाती है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यामों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। व्यक्ति के रहन-सहन,खान-पान,भाषा,पहनने-ओढ़ने,वार्तालाप करने में यह दिखाई देता है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के बढ़ते प्रचलन के कारण आज हम दो हफ्ते,महीने पहले का समाचार पत्र इंटरनेट के माध्यम से पढ़ सकते है।पत्र-पत्रिकाएँ देख सकते हैं,उसे पढ़ सकते है। आज मोबाइल ब्रॉडबैंड के ग्राहक तो केवल १०%हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से लोग आज अपने माहौल,रिश्तेदार और समाज से कटते नजर आ रहें हैं। यहाँ तक कि घर के लोगों से भी संवाद नहीं कर पा रहे हैं। वह या तो नेट पर किसी अनदेखे इन्सान से दोस्ती करते है,या उससे बाते करते रहते हैं या संगीत सुनते रहते हैं या गेम खेलते रहते हैं,या फिर मोबाइल पर घंटों दोस्तों से बातें करते रहते हैं।इसका प्रभाव आपसी रिश्तों पर पड़ रहा है। आज-कल मनुष्य इन माध्यमों का गुलाम बन कर रह गया है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आज यह एक सामाजिक बदलाव का स्वरूप है।आज यह व्यक्ति के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के विकास के लिए नई दिशा की ओर अग्रसर करते है।इलेक्ट्रानिक माध्यमों की पीडा यह भी है कि यह सामाजिक सरोकारों से कटता जा रहा है।इसका सामाजिक अस्तित्व मिटता जा रहा है।

उपसंहार :

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और मुद्रित माध्यमों का अध्ययन करने तथा समाज में और व्यवहारों में इनका प्रचलन करने तथा समाज में और व्यवहारों में इनका प्रचलन करते हुए यह कहा जा सकता है कि एक ओर तो हम देख रहे है कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ रहा हैं।सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक बदलाव तेजी से बढ़ रहे है परंतु इसके दुष्परिणाम भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहे हैं।इसके प्रयोग का समाज में असर दिखना शुरू हो गया है। पर्यावरण भी इसके असर से नही छूट पाया है।आर्थिक मात्रा मे ई-वेस्ट निकलता है। उन्हें जलाने से जहरीले वायु निकलती है,जो हमारे पर्यावरण के लिए घातक है।मोबाइल के अधिक प्रयोग से हमें कई बीमारियों का सामना करणे पडता है।ज्यादा समय तक कम्प्युटर पर काम करते रहने से व्यक्ति की आयु कम हो रही है। भविष्य में इसका प्रयोग बढ़ता ही रहेगा परंतु मनुष्य को अपने स्वास्थ्य के बारे में विचार कर इसका प्रयोग करना चाहिए।मुद्रित माध्यमों का प्रयोग भी आज बढ़ा है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग करने से इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जितनी क्षति होती है उतना ही मुद्रित माध्यम फायदेमंद है क्योंकि पढ़ने से मनुष्य की बुध्दि का सोचने का नया आयाम मिलाता है। पढ़ने से व्यक्ति की सेहत पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पडता उल्टा उसका ज्ञान बढ़ता है। आज भी मुद्रित माध्यम पर लोगों का विश्वास अधिक है तभी तो दुरदर्शन पर देखी हुई जानकारी की पृष्टि के लिए हम अगल दिन के समाचार पत्र मे विस्तृत रूप से जानकारी पढ़ना चाहते हैं।मुद्रित माध्यमों में वाइरस से अपना डाटा डिलीट होने या सर्वर खराब होने से अपनी फाइलें या डेटा खराब होने का कोई डर नहीं रहता।विद्युत कनेक्शन न होने पर भी हम सूर्य की रोशनी में या अन्य रोशनी में बड़ी आसानी से पुस्तके पढ़ सकते हैं। बदलते समय के अनुरसार आपसी विचार-विनिमय के लिए अनेक साधनों का विकास हुआ है परंतु पहले हम जब अपने किसी सगे-सम्बन्धी को पत्र-व्दारा जो भाव व्यक्त करते थे,वह हम आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मिडिया व्दारा व्यक्त नही कर सकते क्योंकि इनमें हम प्रत्यक्ष सम्पर्क तो कर लेते हैं परंतु मुद्रित/लिखित माध्यम से मनुष्य के मन के जो भाव व्यक्त होते है,उनमें भावबोध होता है,जब कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से केवल यथार्थ बोध होता है।

मीडिया के इन दोनों माध्यमों में गुण और दोष दोनों विद्यमान हैं लेकिन दोनों का अपना अलग-अलग महत्त्व है। दोनों ही माध्यमों की सहायता से मनुष्य अपना विकास अच्छी तरह से कर रहा है।दोनों ही माध्यम एक-दुसरे के पुरक है। इन दोनों माध्यमों का योग्य उपयोग करें तो मनुष्य हमेशा अग्रसर रहेगा,सफलता उसके कदम चूमेंगी।

संदर्भ सूची :

१.अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ -डॉ.भोलानाथ तिवारी पृष्ठ.क्र.२०.
२.इलेक्ट्रॉनिक मीडिया - पी.के.आर्य,प्रतिभा प्रतिष्ठान नई दिल्ली -११००२,सं.२०१०,पृ.२१.
३.प्रिंट मीडिया सिद्धान्त एवम् व्यवहार - रूपचंद गौतम,श्री नटराज प्रकाशन,दिल्ली ११००५३,प्र.सं-२००८.पृ-१४.
४.संचारिका पत्रिका अप्रैल -मई-जून ३ २०१२.पृष्ठ सं-४.